आचार्य
श्री नरेंद्र मोदी
ACHARYA (CHANCELLOR)
SHRI NARENDRA MODI
उपाचार्य
प्रो. विद्युत चक्रवर्ती
UPACHARYA (VICE-CHANCELLOR)
PROF. BIDYUT CHAKRABARTY

विश्वभारती
VISVA-BHARATI

(Established by the Parliament of India under
Visva-Bharati Act XXIX of 1951
Vide Notification No. : 40-5/50 G.3 Dt. 14 May, 1951)

संस्थापक
रवीन्द्रनाथ ठाकुर
FOUNDED BY
RABINDRANATH TAGORE

शांतिनिकेतन - 731235
SANTINIKETAN - 731235
जि.वीरभूम, पश्चिम बंगाल, भारत
DIST. BIRBHUM, WEST BENGAL, INDIA
फोन Tel: +91-3463-262 451/261 531
फैक्स Fax: +91-3463-262 672
ई-मेल E-mail: vice-chancellor@visva-bharati.ac.in
Website: www.visva-bharati.ac.in

सं./No._____

दिनांक/Date._____

मेरा चौथा संदेश

10 जुलाई, 2020

विश्वभारती से लाभान्वित मेरे सहयोगी, छात्र एवं अन्य सुधिजन!

यह मेरा चौथा संदेश है। इस श्रृंखला के दौरान मेरा उद्देश्य यह समझना है कि विश्वभारती एक समृद्ध विरासत होने और इसमें सक्षम अकादमिक और गैरशैक्षणिक हितधारक होने के बावजूद लगातार क्यों नीचे जा रहा है। यह दुखद है जिसे परिसर में सामने आने वाली घटनाओं के बारे में मात्र पढ़ने से नहीं समझाया जा सकता है। यहां मैं 2019 के बसंत उत्सव पर ध्यान केंद्रित करूंगा क्योंकि यह एक महामारी का कारण बना। विश्वभारती के अकादमिक संकाय अपने मूल कार्य के लिए जाने जाते हैं, और प्रत्येक विभाग में बहुत प्रतिभाशाली छात्र हैं। शायद प्रतिभा के अपर्याप्त परिपोषण के कारण विश्वभारती नैक और एनआइआरएफ रैंकिंग में पीछे है। हमेशा की तरह, यहां मेरा उद्देश्य दूसरों पर दोष डालकर जिम्मेदारी से बचना नहीं है। विश्वभारती परिवार के सदस्य के रूप में, मैं अपने समान विचारधारा वाले सहयोगियों और अन्य हितधारकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता हूं जो विशेष रूप से महत्वपूर्ण है; क्योंकि, हमारी परिस्थितियां ऐसी हैं कि इस परिवार के विभिन्न सदस्य, दोनों संकाय और गैर-संकाय सदस्य अपने पक्षपाती स्वरूप को संतुष्ट करने के लिए विश्वभारती की निंदा करने वाले लगते हैं।

दिलचस्पी की बात है कि विश्वभारती में और इसके आसपास अर्थव्यवस्था का अस्तित्व और विकास सशक्त विश्वभारती पर निर्भर करता है। जैसा कि मैंने 4 जुलाई, 2020 के अपने तीसरे संदेश में उल्लेख किया है, दो ऐतिहासिक कार्यक्रम हैं, पौष मेला और पौष उत्सव तथा बसंत उत्सव, जिसमें दुनिया भर से लोग शांतिनिकेतन आते हैं। साल में दो बार पर्यटकों के इस प्रवाह के साथ-साथ सालों भर बोलपुर में काफी पर्यटक टैगोरकी विरासत देखने आते हैं जो शांतिनिकेतन में संग्रहालयों, आतिथ्य सेवाओं, जैसे व्यवसायों के लिए आय का स्थायी स्रोत है।

आखिरी संदेश पौष मेला के बारे में था। प्रशासन ने राष्ट्रीय हरित अभिकरण के सख्त निर्देशों का पालन करने के सिलसिले में अनुचित तरीके से विश्वविद्यालय पर कई कानूनीऔर वित्तीय मामले लादे थे। हमें (उन लोगों को जो मेला आयोजित करने से जुड़े थे, जिसमें स्थानीय व्यापारियों ने आय अर्जित की थी) इस भयानक पीड़ा को दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह संदेश एक अन्य ऐतिहासिक कार्यक्रम, बसंत उत्सव पर केंद्रित होगी।

ऐतिहासिक रूप से, बसंत उत्सव, शुरू में, आश्रमवासियों के नए सत्र में प्रवेश करने पर मनाते थे। यह कैसे आरंभ हुआ, इस पर प्रकाश डालने के बजाय, यह कहना काफी होगा कि बसंत उत्सव कभी भी डोल पूर्णिमा (होली के दिन) के दिन मनाना जरूरी नहीं था, इस तथ्य के बावजूद कि जो लोग परिसर में रहते थे वे दोल अबीर / गुलाल के साथ खेलते थे। । 1931 में, जैसा कि श्री शांतिदेव घोष याद करते हैं, उन्होंने और उनके छात्र, श्री बनबिहारी घोष ने एक स्वैच्छिक नृत्य प्रस्तुत किया, जिसे गुरुदेव टैगोर ने सराहा। यहाँ से बसंत उत्सव के दौरान नृत्य प्रदर्शन परंपरा की शुरुआत हुई। इसी के साथ, श्री शांतिदेव घोष ने कहा कि जिस तरह से प्रतिभागी "गंदगी उछालने और स्याही फेंकने के अलावा विभिन्न प्रकार की गंदी हरकतों में शामिल थे" के कारण गुरुदेव ने दोल उत्सव की स्वीकृति नहीं दी। इससे स्पष्ट है कि गुरुदेव दोल समारोह के नाम पर फूहड़ चलन के घोर विरोधी थे। इसलिए उत्सवों को व्यवस्थित करने के लिए गुरुदेव ने स्वयं एक अनुशासित बसंत उत्सव के लिए नियम और कानून बनाए। गुरुदेव ने 1938 में फिर से अपनी नाराजगी व्यक्त की जब एक छात्र ने बैतालिक (आश्रम क्षेत्र में सुबह की शोभायात्रा) में दुर्व्यवहार किया।उन्होंने

टिप्पणी की कि "निरंकुश आनंद के कारण उच्छृंखल व्यवहार हुआ जिससे न केवल हम शर्मसार हुए बल्कि उत्सव का अलौकिक आनंद का वातावरण भी बिगड़ गया"।

प्रो0 अमलान दत्ता, कुलपति, विश्वभारती के कार्यकालमें सन् 1982 में उत्सव का तेजी से पतन शुरू हुआ। उस वर्ष, उत्सव में भाग लेने वाली भीड़ आम्र कुंज में आम के पेड़ों की शाखाओं पर चढ़कर बैठ गई। शाखाओं के गिरने की वजह से भारी गड़बड़ी हुई और कई लोग घायल हुए। इतना ही नहीं, अनियंत्रित भीड़ ने कई प्रतिभागियों और उपस्थित लोगों को शर्मसार किया। प्रो0 दत्ता ने बसंत उत्सव का आयोजन न करने का फ़ैसला किया जिसका मुख्य कारण विश्वभारती को बदनाम करने वाली ये अनहोनी घटनाएँ हैं। द हिंदुस्तान स्टैंडर्ड (1 मार्च, 1982 के अपने संस्करण में) ने इस भावना को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हुए लिखा कि "पिछले साल होली उत्सवविलासी कथित रूप से अनुचित व्यवहार में लिप्त पाए गए।परिणामस्वरूप,कर्मी मंडली, गैरशिक्षण कर्मचारियों के संघ ने होली के दिन उत्सव का आयोजन न करने का फैसला लिया।" उसके बाद बसंत उत्सव छोटे पैमाने पर आयोजित किया जाने लगा।

विश्वभारती परिवार के सदस्य के रूप में शामिल होने के बाद, मैंने 2019 में पहला बसंत उत्सव देखा। उत्सव देखने वाले और प्रतिभागियों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर उत्सव आश्रम मैदान में आयोजित किया गया। यह दोल पूर्णिमा के दिन आयोजित किया गया था। पूरे देश के लोग बोलपुर और विश्वभारती के परिसर में भर गए। हमेशा की तरह, हमने सभ्य तरीके से त्योहार का प्रबंधन करने के लिए पुलिस और स्थानीय प्रशासन के साथ कई बैठकें कीं। विश्वभारती ने उन निर्देशों का पालन किया जो पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने दिए थे। हमने कई लाख रुपये खर्च किए जबकि हमारी कोई आय नहीं थी। त्योहारों के आयोजन के लिए न तो यूजीसी और न ही एमएचआरडी फंड प्रदान करता है। विश्वविद्यालय के पास परिसर के विकास के लिए राजस्व पर निर्भर रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं रह गया।

पुलिस के अनुमान के अनुसार, 2,50,000 से अधिक लोग इस उत्सव में शामिल हुए। इतनी बड़ी भीड़ को समायोजित करने के लिए मैदान बहुत छोटा था। परिणाम स्पष्ट थे: बोलपुर शहर भर में बड़े पैमाने पर

ट्रैफिक जाम, और सड़कों पर वाहनों की लंबी कतार। संभवतया आने वाले लोगों की संख्या के गलत अनुमान के कारण यातायात प्रबंधन फेल हो गया।

कार्यक्रम समाप्त होते ही उपद्रव मच गया। हर कोई जल्द से जल्द जाना चाहता था।अत: भीड़ बेकाबू हो गई। अचानक भीड़ बढ़ने से भगदड़ का डर भी था। जो लोग नृत्यकला का आनंद लेने आए थे उनमें से कई लोग घंटों फँसे रहे और थोड़ी दूर भी नहीं निकल सके जिसके कारण उनकी ट्रेन छूट गई या फिर परिसर और उसके आसपास के इलाकों में अपने निवास तक नहीं पहुंच सके। कई लोगों ने बूढ़े लोगों और बच्चों की सहायता के लिए पुलिस और प्रशासन को एसओएस भेजा। पूरे परिसर में कानून और व्यवस्था फेल हो गया। बुनियादी मानवीय सरोकार का भी पूरा अभाव था। कई महिला दर्शकों के साथ धक्का-मुक्की एवं छेड़छाड़ हुई। कुछ महिला शिकायतकर्ताओं के अनुसार,गंभीर शारीरिक चोट से बचने के लिए उनके पास खुद को इस तरह के अपमान सहने के अलावा कोई चारा नहीं था।जो इस गड़बड़ी में फेसबुक कवरेज में शामिल थे,वे इन प्रतिभागी महिलाओं की पीड़ा को बयां कर सकेंगे।

यह गर्म दिन था।बहुत से दर्शकों को पीने के पानी तक नहीं मिला क्योंकि विश्वभारती प्रशासन की अपेक्षा से अधिक दर्शक थे। जल्दी ही प्रतिभागियों और दर्शकों के लिए पानी के पाउच खत्म हो गए।शीघ्र ही आयोजन स्थल के पास पानी टैंक की व्यवस्था की गई। यह भी उजागर किया जाना जरूरी है कि प्लास्टिक के पाउच की आपूर्ति से एक स्व-घोषित पर्यावरणविद् को नाराजगी हुई जिन्होंने राष्ट्रीय हरित अभिकरण में शिकायत दर्ज कराई और यहां तक कि विश्वभारती के खिलाफ भी मामला दर्ज किया, जिसके लिए निर्दोष विश्वविद्यालय पैसा खर्च कर रहा है।

हमारी महिला छात्रों, कलाकारों और दर्शकों दोनों से शारीरिक रूप से छेड़छाड़ की गई और उन पर फब्तियाँ कसी गई। प्रतिमा छात्रावास के पास अनहोनी हुई, जहां हमारी छात्राओं को परिसर के बाहर के शरारती तत्वों ने घेर लिया। हमारे सुरक्षा कर्मचारियों ने जाकर स्थिति को संभाला, हालांकि अचानक हमले के कारण छात्राएं पीड़ित हुई।

बोलपुर शहर शाम तक वर्जित क्षेत्र रहा, हालांकि कार्यक्रम सुबह 10 बजे पूर्वाह्न समाप्त हो गया था। कहने का मतलब यह है कि न तो पुलिस, न ही स्थानीय प्रशासन, और न ही विश्वविद्यालय सुरक्षा कर्मचारी इस अवसर पर लोगों की अचानक वृद्धि का प्रबंधन करने के लिए सुसज्जित थे। विश्वभारती असहाय थी।

बसंत उत्सव के तुरंत बाद बुलाई गई बैठक में हमने (प्रशासन, शिक्षक, छात्र और गैरशिक्षण कर्मचारी) किन कारणों पर गहन चिंतन किया?

1) जब हम (शिक्षक, छात्र, गैरशिक्षण कर्मचारी, पाठ भवन और शिक्षा सत्र के छात्र और हमारे एनएसएस स्वयंसेवक) मैदान की सफाई करने लगे जहाँ बसंत उत्सव हुआ था, तो हमें कई शराब की बोतलें मिलीं जिन्हें उठाने के लिए हमें 35 बैगों की आवश्यकता पड़ी। मैं यह बताने के लिए बैगों की संख्या का उल्लेख कर रहा हूं कि कार्यक्रम के दौरान कई पर्यटकों ने शराब का सेवन किया, जो आंशिक रूप से उनमें से कई के अभद्र व्यवहार को इंगित करता है।

2) मैदान की सफाई करते समय, हमने खाद्य पदार्थ भी पाया जो इस बात की पुष्टि करता है कि जो लोग कार्यक्रम का आनंद लेने के लिए आए थे, वे वह दिन बिताने के लिए पूरी तैयारी के साथ आए थे क्योंकि उन्होंने अपने दोपहर का भोजन मैदान में किया था। सबसे हैरानी की बात थी मांसाहारी खाद्य पदार्थ (मुर्गी और बकरे का माँस पकाया जाना) जो आश्रम में सख्त वर्जित है।

3) भोजन और प्लास्टिक के थैले बिखड़े पड़े थे।मैदान काफी गंदा था क्योंकि कई दर्शकों ने इसे शौचालय के रूप में व्यवहार किया था। हमें मानव मल को भी साफ करना पड़ा।

4) लगातार चार घंटे काम करने के बाद, आश्रम के मैदान को साफ कियाजा सका।

उपरोक्त के मद्देनजर, हमने, एक बैठक में,आगे से बसंत उत्सव न करने का फैसला किया। विश्वविद्यालय न्यायालय के सदस्य, डॉ0 स्वपन दासगुप्ता, राज्यसभा के माननीय सदस्य, को सूचित किया गया और उन्होंने भी माना कि चूंकि विश्वभारती कार्यक्रम आयोजक नहीं है, इसलिए विश्वविद्यालय के लिए इस तरह का विशाल आयोजन करना मुश्किल है। उन्होंने राज्यसभा में यह मुद्दा उठाया। हालाँकि हम इस लंबी परंपरा को जारी रखना चाहते थे लेकिन छोटे पैमाने पर। हमने, दूसरी बैठक में, यथासंभव आश्रम की परंपराओं का सख्ती से पालन करते हुए पूर्णिमा के दिन, फरवरी-मार्च के दौरान बसंत उत्सव आयोजित करने का निर्णय लिया। जब यह घोषणा की गई तो पश्चिम बंगाल सरकार ने दोल पूर्णिमा के

दिन, बसंत उत्सव 2020 के सफल आयोजन के लिए विश्वभारती में मार्शल संसाधनों की मदद करने के लिए सहमति व्यक्त की, क्योंकि यह पश्चिम बंगाल के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम है। विश्वभारती सहमत हुई ताकि बसंत उत्सव को बसंत तांडव (आपदा) में बदलने से रोका जा सके।

दुर्भाग्य से, कोविद -19 के प्रकोप के कारण विश्वभारती के लिए उत्सव का आयोजन करना संभव नहीं था। 5 मार्च, 2020 के पत्र में यूजीसी ने विश्वविद्यालयों को बड़ी सभाओं का आयोजन करने के लिए मना कर दिया । अत: विश्वभारती में उत्सव नहीं हो सका। हमें भारी मन से उत्सव को रोकना पड़ा। हमारे लिए यही सही था। हम यूजीसी के निर्देश से बंधे थे। हम पश्चिम बंगाल सरकार, विशेष रूप से माननीय मुख्यमंत्री महोदया,सुश्री ममता बनर्जी, माननीय मंत्रियों, श्री फिरहाद हकीम और डॉ0 पार्थ चटर्जी, बीरभूम के पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में पुलिस प्रशासन और डीएम के मार्गदर्शन में स्थानीय प्रशासन के आभारी हैं जिन्होंने 2020 में बसंत उत्सव को सफल नबनाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किया ।

मुझे उम्मीद है कि इस स्पष्टीकरण से बसंत उत्सव के संबंध में प्रशासनिक निर्णय स्पष्ट हो गया है। हमेशा की तरह, मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप सुरक्षित रहें और जुड़े रहें।

भरोसा रखें

बिद्युत चक्रवर्ती २०/०३/२०२०

बिद्युत चक्रवर्ती

विश्वभारती
शान्तिनिकेतन

Vice-Chancellor
Visva-Bharati
Santiniketan
West Bengal-731235
India